दूसरी नज़र

■ पी चिदंबरम

सच्चे दिन मिल सकते हैं !

मेरे सामने एक मई का इंडियन एक्सप्रेस रखा है और मैं इन दिनों चल रहे चुनावों की रिपोर्टें पढ़ रहा हूं। एक खबर प्रमुखता से लगे शीर्षक वाली यह है, 'जिस पार्टी का विपक्षी नेता नहीं है वह प्रधानमंत्री का सपना देख रही है : मोदी'। इस रिपोर्ट में नरेंद्र मोदी के लखनऊ और मुजफ्फरपुर में दिए गए भाषणों का अच्छा-खासा ब्योरा है।

भारत का सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश सभी दलों के लिए प्रमुख रणक्षेत्र बना हुआ है। 2019 में भाजपा के लिए यह खासतौर से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि 2014 में उसने अस्सी में जिन इकहत्तर सीटों पर जीत हासिल की थी, उन्हें बनाए रखने के लिए वह संघर्ष कर रही है। इन इकहत्तर सीटों की बदौलत ही भाजपा ने लोकसभा में बहुमत हासिल कर सरकार बनाई थी। अगर भाजपा उत्तर प्रदेश में अपनी इन जीती हुई सीटों में से आधी पर भी हार जाती है तो वह अपने बूते सरकार नहीं बना पाएगी। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मोदी अपना ज्यादातर वक्त उत्तर प्रदेश को दे रहे हैं।

इसमें कुछ गलत भी नहीं है, सिवाय इसके कि हर नए भाषण में मोदी जबर्दस्ती भोलापन दिखाते हुए असाधारण दावे कर रहे हैं। वे औसत स्कूल या कॉलेज में पढ़े मतदाता की समझ को भी चुनौती दे रहे हैं। सच्चाई के मामले में कोई व्यक्ति कितनी आजादी ले सकता है, इसकी सीमा भी वे परख रहे हैं। मोदी के कुछ दावों को देखिए-

कोई बम विस्फोट नहीं?

आतंकवाद से लड़ने में अक्षमता के लिए कांग्रेस और दूसरों के खिलाफ रोने-कलपने के बाद मोदी ने कहा- 'फिर कभी आपने मंदिरों, बाजारों, रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड या कहीं और विस्फोट सुने? ये बम विस्फोट रुके या नहीं? ये विस्फोट मोदी के डर से रुके हैं।'

इससे पहले उन्होंने बार-बार यह दावा किया था कि उनके पिछले पांच साल के कार्यकाल में कोई बम विस्फोट नहीं हुआ!

दुर्भाग्यवश, तथ्य कुछ और कह रहे हैं। पिछले पांच साल में हुए बड़े बम विस्फोटों की एक आंशिक सूची यहां दे रहा हूं, जिसमें उस दिन की वाली बम विस्फोट की घटना शामिल है जिस दिन मोदी ने अपना यह झूठा दावा किया-

तारीख	जगह	मृतकों की संख्या
5-12-2014	मोहरा (जम्मू-कश्मीर)	10
10-04-2015	दंतेवाड़ा	5
27-01-2016	पलामू	6
19-07-2016	औरंगाबाद (बिहार)	10
02-02-2017	कोरापुट (ओड़ीशा)	7
10-05-2017	सुकमा	25
27-10-2018	अवापल्ली (छत्तीसगढ़)	4
14-02-2019	पुलवामा	44
09-04-2019	दंतेवाड़ा	5 (एक भाजपा विधायक सहित)
01-05-2019	गढ़चिरौली	15

इतिहास से सीखने की जरूरत

मोदी का दूसरा पसंदीदा विषय यह है कि उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ पहली 'सर्जिकल स्ट्राइक' की और इससे पहले किसी भी सरकार ने भारतीय सेना को सीमा पार करने और पाकिस्तानी क्षेत्र में घुसने की इजाजत नहीं दी थी। मुझे आश्चर्य है कि क्या मोदी ने यह नहीं सुना (या पढ़ा) था कि 1965 या 1971 में सेना ने क्या किया था! क्या भारतीय रक्षा बलों ने युद्ध नहीं जीते, और 1971 में पाकिस्तानी क्षेत्र में घुसे बिना बांग्लादेश को आजाद नहीं कराया? इसके अलावा, सेना के जनरलों ने भी मोदी के दावों को गलत बताया है और दावे के साथ कहा कि 'ऐसा न तो पहली बार हुआ था और न ही आखिरी बार होगा'। सीमापार हुई पिछली कार्रवाइयों की एक सारणी यह है-

21-01-2000	नदाला एनक्लेव, नीलम नदी के पार
18-09-2003	बरोह सेक्टर, पुंछ
19-06-2008	भट्टाल सेक्टर, पुंछ
30-08-2011	शारदा सेक्टर, नीलम नदी के पार
06-01-2013	सावन पत्रा चौक पोस्ट
27-07-2013	नाजापीर सेक्टर
06-08-2013	नीलम घाटी

नरेंद्र मोदी सिर्फ राजनीतिक दल के नेता और चुनाव प्रचारक नहीं हैं। वे भारत के प्रधानमंत्री हैं। लोगों को ताज्जुब तो इस बात का है कि देश का प्रधानमंत्री बार-बार झूठ को ही क्यों दोहराता है। यह याददाश्त कमजोर पड़ने का मामला तो नहीं हो सकता, क्योंकि नरेंद्र मोदी ने बार-बार यह याद दिलाया है कि बम विस्फोटों और सर्जिकल स्ट्राइक के उनके दावे प्रमाण के रूप में गलत थे। यह कोई चुनावी चतुराई भी नहीं हो सकती, क्योंकि जब लोग बार-बार एक ही झूठ को सुनेंगे तो भड़क उठेंगे। मेरा मानना है कि इसका जवाब मोदी के व्यक्तित्व में कहीं गहरे मौजूद है।

असल मुद्दों पर चुप्पी

हाल में मोदी ने दावा किया कि उन्होंने कभी भी न तो अपने को चायवाला होने का जिक्र किया, न जाति का। मैं भौचक रह गया, और कुछ जानकारी जुटाई। श्री मोदी ने अलग-अलग तारीखों को ऐसे कई बयान दिए। सबसे पहले मुझे जो देखने को मिला, वह 28 सितंबर 2014 का बयान था जिसमें उन्होंने खुद को चायवाला बताया था, और उसके बाद कई बार वे यह कह चुके हैं। इसी तरह, ऐसे कई बयान हैं जिनमें मोदी ने अपने को पिछड़ी जाति का बताया। दो बयान तो हाल ही के हैं, एक 25 मार्च, 2018 का और दूसरा 18 अप्रैल, 2018 का। उनके कहे शब्दों को हूबहू यहां कहना जरा अपमानजनक होगा क्योंकि वे भारत के प्रधानमंत्री हैं और मैं इस पद का सम्मान करता हूं। मोदी को खुश होना चाहिए कि कोई भी तथ्यों पर ऐसी निगरानी नहीं कर रहा है जैसी कि डोनाल्ड ट्रंप के भाषणों में की जाती है!

दुखद पहलू तो यह है कि ऐसे कई बड़े और प्रमुख मुद्दे हैं जिन पर प्रधानमंत्री बोल सकते हैं और ज्यादातर लोग प्रधानमंत्री से इस बारे में सुनना चाहेंगे। लेकिन विचित्र कारणों से मोदी अपनी पार्टी के चुनावी घोषणापत्र के बारे में बात नहीं करेंगे, वे बेरोजगारी और नौकरियों के बारे में बात नहीं करेंगे, वे किसानों के संकट और कर्ज के बारे में बात नहीं करेंगे, वे कृषि उत्पादों के गिरते दाम और कृषि बीमा योजना की नाकामी के बारे में बात नहीं करेंगे, और वे महिलाओं, दलितों, अनुसूचित जातियों, शिक्षाविदों, अध्येताओं, पत्रकारों और एनजीओ आदि में फैले खौफ के बारे में कुछ नहीं बोलेंगे।

नरेंद्र मोदी दावा करते हैं कि अच्छे दिन, जिसका उन्होंने वादा किया था, आ गए हैं। पर यह सच से काफी दूर है। लोग जानते हैं कि कोई अच्छे दिन नहीं हैं। झूठ सुन कर लोग थक चुके हैं और गुस्से में हैं और सच्चाई की थोड़ी सी खुराक के लिए तरस रहे हैं।

हिममानव के पदचिह्न

तीरंदाज

■ अश्विनी भटनागर

> येति को आमतौर पर द्विपाद के रूप में वर्णित किया जाता है, पर अधिकतर वैज्ञानिकों का विश्वास है कि जाइगनटोपिथेकस चौपाया था। कभी-कभी वह कुछ देर के लिए दो पैरों पर खड़ा हो जाता था।

येति मिल गया है। हां, उसके साक्षात दर्शन तो अभी नहीं हुए हैं, पर उसके चरण चिह्न भारतीय सेना के सौजन्य से जरूर उपलब्ध हो गए हैं। सेना की तरफ से हाल ही में एक ट्वीट जारी की गई थी, जिसमें इस मिथक मानव के कदमों के निशान दूर तक तस्वीरों में देखे जा सकते हैं। सेना का कहना था कि उसका एक पर्वतारोही दल मकालू शृंखला पर लगभग साढ़े तीन हजार मीटर की ऊंचाई पर था, जब उसे अचानक इस भीमकाय आदि मानव के पैरों के निशान बर्फ पर अंकित मिले थे। सेना के दल ने इनकी फोटो तो ली ही, साथ-साथ पैरों की पूरी माप-तोल भी कर ली थी।

ट्वीट के आते ही सब तरफ सनसनी फैल गई। फैलती भी क्यों न? येति अपने में एक बड़ा ही रोचक जीव है, जिसकी खोज पिछली दो सदियों से बड़े जोर-शोर से चल रही है। इस हिममानव का जिक्र बहुत सारी नेपाली और तिब्बती किस्सों-कहानियों में भी आता है। चूंकि पदचिह्न सेना ने जारी किए थे, इसलिए ट्विटर पर राष्ट्रवादी ताकतों ने उसको बेहद गंभीरता से लिया। उनके मुताबिक येति को अब मिला ही मान लेना चाहिए। एक साहब ने तो यहां तक कह डाला कि उनकी आस्था के अनुसार येति और कोई नहीं, बल्कि महाबली हनुमान स्वयं हैं। हनुमान चिरायु हैं- वे सतयुग में भी थे, द्वापर में भी और त्रेता में भी।

कलयुग में उनका प्रभाव सबसे अधिक है। वे जीवित हैं और दूर हिमालय की कंदराओं में मानव कल्याण के लिए तपस्या करने में लीन हैं। और चूंकि हनुमानजी शक्ति का प्रतीक हैं, इसीलिए उनके होने के प्रमाण सेना को मिलना स्वाभाविक ही था। उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि नेपाल सेना ने हमारे दावे को सिरे से काट दिया। उनके मुताबिक फोटो में दिख रहे पदचिह्न उन इलाकों में आमतौर पर पाए जाने वाले भालू के हैं।

वैसे येति, जिसे अंग्रेजी में अबोमिनेबल स्नोमैन (घृणित हिममानव) भी कहा जाता है, का किस्सा काफी पुराना है और रोचक भी। माना जाता है कि वह एक पौराणिक प्राणी और एक वानर जैसा क्रिप्टेड है, जो कथित तौर पर नेपाल और तिब्बत के हिमालय क्षेत्र में निवास करता है। उसके लिए येति और मेह-तेह नामों का उपयोग आमतौर पर क्षेत्र के मूल निवासी करते हैं, और यह उनके इतिहास और पौराणिक कथाओं का हिस्सा है। यह उत्तरी अमेरिका के बिग फुट किंवदंती की तरह माना जाता रहा है।

'घृणित हिममानव' पद को 1921 तक नहीं गढ़ा गया था। उस वर्ष लेफ्टिनेंट कर्नल चार्ल्स हॉवर्ड-बरी ने अल्पाइन क्लब और रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी के संयुक्त एवरेस्ट रिकॉनिसन्स एक्सपिडिशन (एवरेस्ट टोही अभियान) का नेतृत्व किया था, जिसका वृत्तांत उन्होंने 'माउंट एवरेस्ट द रिकॉनिसन्स', 1921 में लिखा था। इस पुस्तक में हॉवर्ड-बरी इक्कीस हजार फीट में ल्हाक्पा-ला को पार करने का एक विवरण शामिल करते हैं, जहां उन्हें कुछ ऐसे पदचिह्न मिले, जिन्हें देख कर उनके शेरपा पथप्रदर्शकों ने उन्हें तुरंत बताया था कि ये निशान 'बर्फों के जंगली मानव' के हैं, जिन्हें वे मेतोह-कांगमी कहते हैं। मेतोह का अनुवाद मानव-भालू है और कांग-मी का मतलब हिममानव है।

'घृणित हिममानव' शब्द की उत्पत्ति निश्चय ही रंगीन है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब हेनरी न्यूमैन, जो किम उपनाम से कोलकाता के द स्टेट्समैन अखबार में लिखते थे, ने दार्जिलिंग लौटने पर एवरेस्ट रिकॉनिसन्स एक्सपिडिशन के कुलियों का साक्षात्कार लिया था। न्यूमैन ने शायद कलात्मक अनुज्ञप्ति के कारण 'घृणित' शब्द की जगह 'मेतोह' शब्द को 'घिनौने' या 'गंदे' शब्दार्थों के रूप में गलत अनुवाद किया था। जैसा कि लेखक बिल टिलमैन वर्णन करते हैं, 'न्यूमैन ने लंबे अरसे बाद द टाइम्स के लिए एक पत्र में लिखा : पूरी कहानी एक ऐसी आनंदमय रचना लगी कि मैंने इसे एक या दो समाचारपत्रों को भेज दिया।' साफ है कि न्यूमैन ने शेरपाओं की कहानियों में नमक-मिर्च लगा कर अपनी लेखनी चमकाने के लिए घृणित हिममानव रच डाला था।

बीसवीं सदी के दौरान खबरों की आवृत्ति में वृद्धि हुई, जब पश्चिम वासियों ने इसके बारे में कई पर्वतों की खाक छाननी शुरू कर दी और समय-समय पर अजीबोगरीब प्राणियों या अजीब तरह के पदचिह्नों को देखने की सूचना दी। 1925 में एनए टोंबाजी, जो एक फोटोग्राफर और रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी के सदस्य थे, एक मिनट तक जेमू ग्लेशियर के पास एक प्राणी को देखा था। 'इसमें कोई संदेह नहीं कि उसकी कद-काठी बिल्कुल एक इंसान की तरह थी, जो सीधा चल रहा था और कुछ बौनी बुरुश झाड़ियों को तोड़ने के लिए कभी-कभी बीच-बीच में रुक रहा था। यह बर्फ की तुलना में काला दिखाई दिया और जहां तक मैं समझ सकता था, इसने कपड़े नहीं पहने थे।'

येति के प्रति पश्चिमी लोगों की रुचि में 1950 के दशक में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई थी। 1951 में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का प्रयास करते समय एरिक शिप्टन ने सागर तल से लगभग बीस हजार फीट ऊपर बर्फ में अनगिनत बड़े-बड़े निशानों की तस्वीरें ली थी। 1953 में सर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग नोर्गे ने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के समय बड़े-बड़े पदचिह्नों को देखने की खबर दी थी। 19 मार्च, 1954 को डेली मेल में एक लेख छपा था, जिसमें कथित तौर पर अभियान दलों द्वारा पैंगबोचे मठ में पाए गए येति की खोपड़ी की खाल से बालों के नमूने प्राप्त करने का वर्णन था। नमूनों का वैज्ञानिक विश्लेषण भी हुआ था, पर वे किस प्राणी के बाल हैं, पता नहीं चल पाया था।

1970 में ब्रिटिश पर्वतारोही डॉन ह्विलंस ने अन्नपूर्णा पर चढ़ते समय एक प्राणी को देखने का दावा किया। ह्विलंस के मुताबिक, एक शिविर-स्थल की खोज करते समय उन्होंने कुछ अजीब-सी आवाजें सुनीं, जिसे उनके शेरपा पथप्रदर्शक ने येति की आवाज बताया था। उस रात उन्होंने अपने शिविर के पास एक काली आकृति को घूमते हुए देखा था। अगले दिन, उन्होंने बर्फ में कुछ मानव जैसे पदचिह्न देखे और उस शाम, उन्होंने दूरबीन से बीस मिनट तक एक दो पैरों वाले वानर जैसे दिखने वाले प्राणी को देखा था, जो जाहिर तौर पर उनके शिविर से कुछ दूरी पर भोजन की तलाश में था।

वर्ष 2007 के दिसंबर के आरंभ में अमेरिकी टीवी प्रस्तुतकर्ता जोशुआ गेट्स और उनकी टीम ने नेपाल के एवरेस्ट क्षेत्र में पदचिह्नों की एक शृंखला ढूंढ़ने की खबर दी, जो येति के विवरण जैसा था। इन पदचिह्नों की जांच इडाहो स्टेट यूनिवर्सिटी ने की, जिन्हें विश्वास था कि वे आकृति विज्ञान की दृष्टि से इतने सटीक थे कि उन्हें नकली या मानव निर्मित नहीं कहा जा सकता था। उसके बाद भूटान यात्रा के दौरान गेट्स की टीम को एक पेड़ पर बालों का एक नमूना मिला, जिसका परीक्षण करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया कि बाल किसी अज्ञात नर वानर के थे।

कुछ वैज्ञानिकों का अंदाजा है कि ये कथित प्राणी विलुप्त दैत्याकार वानर जाइगनटोपिथेकस के आधुनिक नमूने हो सकते हैं। येति को आमतौर पर द्विपाद के रूप में वर्णित किया जाता है, पर अधिकतर वैज्ञानिकों का विश्वास है कि जाइगनटोपिथेकस चौपाया था। कभी-कभी वह कुछ देर के लिए दो पैरों पर खड़ा हो जाता था। वह विशाल भी था और येति के वर्णन से मिलता-जुलता है। नए फोटो की जांच के लिए भारत को अब युद्ध स्तर पर अभियान छेड़ना चाहिए।

बदलाव के बावजूद

वक़्त की नब्ज़

■ तवलीन सिंह

> महगठबंधन बना ही है इस डर से कि मोदी अगर दुबारा प्रधानमंत्री बन जाते हैं, तो देश का राजनीतिक चरित्र और बदल डालेंगे। मगर इस बदलाव से भारत को लाभ हुआ है, क्योंकि वे लोग राजनीति में आने की सोचने लगे हैं अब, जो किसी राजनीतिक परिवार या राजनीतिक दल के वारिस नहीं हैं।

मुझे मोदी की भक्तन कहते हैं मेरे कई पत्रकार बंधु और सोशल मीडिया पर भारत के राजपरिवार की समर्थक। इसके बावजूद जब भी मुझे लगा है कि मोदी ने कोई गलती की है, मैंने डंट कर उस गलती की आलोचना की है। गलतियां हुई हैं। कुछ तो बहुत बड़ी गलतियां। अपनी निजी फेहरिस्त में नंबर एक पर मैं नोटबंदी रखती हूं। मेरी राय में नोटबंदी से भारत का नुकसान ज्यादा हुआ है। लाभ बहुत कम। दूसरे नंबर पर मैं रखती हूं गोरक्षकों की हिंसा और प्रधानमंत्री का उस पर मौन रहना। तीसरे नंबर पर मैं रखती हूं मोदी का घबरा कर अपनी तय हुई आर्थिक दिशा बदल डालना, जब राहुल गांधी ने 'सूट-बूट की सरकार' वाला उन पर ताना कसा था।

मोदी ने 2014 के चुनाव अभियान में वादा किया था आर्थिक दिशा बदलने का। कहा करते थे तब कि भारत को समृद्धि का सपना देखना चाहिए, सिर्फ गरीबी हटाने का नहीं। कहा करते थे कि सरकार का कोई बिजनेस नहीं होना चाहिए। सो, इशारा गया उस वक्तव्य से कि निजी निवेशकों का स्वागत है भारत की अर्थव्यवस्था में। इशारा था कि जिन समाजवादी नीतियों के कारण भारत गरीब और पिछड़ा रहा है, उनको बदल कर वे देश की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाने का काम करेंगे। इस वादे को पूरा किया होता मोदी ने, तो मुमकिन है कि आज रोजगार की बहार आ गई होती भारत में और उनके इस चुनाव में हारने की चर्चा भी न होती।

राजनीतिक क्षेत्र में मोदी परिवर्तन लाए हैं। एक नए किस्म का भारतीय राजनीति में आ गया है। जिन मुट्ठी भर राजनीतिक परिवारों में संसद में प्रवेश पाने के सारे टिकट हुआ करते थे, उनको इस नए किस्म के राजनीतिज्ञ से खतरा है, सो वे मोदी के आज सबसे बड़े दुश्मन हैं। महगठबंधन बना ही है इस डर से कि मोदी अगर दुबारा प्रधानमंत्री बन जाते हैं, तो देश का राजनीतिक चरित्र और बदल डालेंगे। मगर इस बदलाव से भारत को लाभ हुआ है, क्योंकि वे लोग राजनीति में आने की सोचने लगे हैं अब, जो किसी राजनीतिक परिवार या राजनीतिक दल के वारिस नहीं हैं। यह बहुत अच्छी बात है।

मेरी राय में मोदी की सबसे सफल योजना स्वच्छ भारत है। जहां ग्रामीण भारत में 2014 में एक भी जिला नहीं था, जिसमें खुले में शौच करने की गंदी प्रथा पूरी तरह समाप्त कर दी गई थी। आज तकरीबन पूरे देश में यह बंद हो चुकी है। साथ में स्वच्छता की क्रांति आ गई है, जिसके सिपाही बन गए हैं ग्रामीण भारत के युवा और युवतियां। काश कि शहरी भारत में भी यह क्रांति आई होती। लेकिन यह भी याद रखना जरूरी है कि अगर हमारे सारे शहर और महानगर गंदी बस्तियों जैसे दिखते हैं, तो यह हाल पैदा हुआ है दशकों की लापरवाही के कारण। मोदी ने कम से कम इशारा तो किया है कि यहां परिवर्तन लाना जरूरी है।

मोदी ने बहुत कुछ किया है देश के लिए, लेकिन मतदाताओं की दृष्टि में यह सब काफी नहीं है। तो, मोदी को प्रधानमंत्री नहीं रहने देंगे तेईस मई के बाद, बिना किसी ब्रिटिश पत्रिका की नसीहत लिए। इस पत्रिका ने पिछले हफ्ते एक संपादकीय में लिखा है कि मोदी ने भारत में इतनी नफरत फैलाई है, इतनी गलतियां की हैं कि कांग्रेस पार्टी को जिताना जरूरी हो गया है। साथ में कांग्रेस पार्टी की तरफदारी इस आधार पर की है कि कांग्रेस मजहब और जाति को लेकर भारतीयों में फूट नहीं डालती है। मैंने जब यह पढ़ा तो ऐसा लगा जैसे किसी ऐसे व्यक्ति ने यह लेख लिखा होगा, जिसको भारत का इतिहास बिल्कुल मालूम नहीं होगा। इतिहास पढ़ने की जरूरत ही नहीं है आज। गूगल करके ही क्षणों में पता लग जाता है कि कितने दंगे हुए हैं किस साल में, जाति-मजहब को लेकर। बिना उस जनसंहार की बात किए, जो 1984 में राजीव गांधी का कार्यकाल शुरू होते हुआ था और जिसमें तीन हजार से ज्यादा बेगुनाह सिख मारे गए थे। राजीव ने इस जनसंहार को जायज ठहराया था।

इकोनॉमिस्ट अखबार का आरोप है कि मोदी की नीतियों के कारण कश्मीर घाटी में अराजकता फैली है। इस आरोप को पढ़ कर मुझे फिर से लगा कि इस लेखक ने अज्ञानवश यह लेख लिखा है। कश्मीर की समस्या दशकों पुरानी है और पैदा हुई है कांग्रेस प्रधानमंत्रियों की गलतियों के कारण। यह सच है कि मोदी घाटी में अराजकता खत्म नहीं कर पाए हैं, लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि इसकी शुरुआत हुई थी बुरहान वानी की मुठभेड़ में हत्या के बाद। और बुरहान वानी ने अपने हर वीडियो में स्पष्ट किया था कि वह भारत के खिलाफ अपना जंग तब तक जारी रखेगा जब तक कश्मीर घाटी में शरीअत का निजाम नहीं नाफिस होता है।

ऐसा अगर किसी ब्रिटिश राज्य में किसी जिहादी ने करने की कोशिश की होती तो ब्रिटेन की सरकार क्या करती? क्या शरीअत नाफिस होने देती? या उन जिहादियों को ढूंढ़ कर मारती, जो उनके देश में इस्लामी रियासत का निर्माण करना चाहते हैं? मोदी ने हर तरह से कोशिश की है कश्मीर घाटी में शांति लाने की। पहले सख्ती दिखा कर और बाद में 'कश्मीरियत, इंसानियत, जम्हूरियत' का नारा देकर। अटल बिहारी वाजपेयी ने यह नारा दिया था अपने दौर में और काफी हद तक शांति ला सके थे घाटी में। लेकिन तब कश्मीरी लड़ रहे थे 'आजादी' के नाम पर। आज इस मुहिम का नेतृत्व जो कर रहे हैं उनकी मांग है शरीअत। निजाम-ए-मुस्तफा। यह ऐसी मांग है, जिस पर कोई भी भारतीय प्रधानमंत्री बहस करने को तैयार नहीं हो सकता। कांग्रेस का भी कोई प्रधानमंत्री नहीं।

हारी हुई आलोचना

बाखबर

■ सुधीश पचौरी

> बस एक ही सुंदर और प्रसन्न क्षण तब बनता दिखा, जब चैनलों में खबर ब्रेक हुई कि यूएन द्वारा मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय टेररिस्ट घोषित कर दिया गया है। अपने कई एंकर इसे सुन अपना सीना ऐसे फुलाए रहे, मानो उनके ही पुण्य प्रयत्नों से ऐसा हुआ हो।

अदालत के गलत हवाले से कहे गए वाक्य पर अदालत के आगे राहुल ने खेद जताया। लेकिन राहुल को राहत नहीं दी गई। अदालत ने कह दिया कि फिर से हलफनामा दें।

इस पर कई चैनल प्रतियोगिता में आमने-सामने रहे। एक कहता कि राहुल संकट में!दूसरा कहता कि राहुल परेशानी में!

इसके आगे बहसें खड़ी थीं। लेकिन इसमें बहसें क्या करेंगी? करना तो अदालत को है और अदालत ने कह दिया कि फिर से साफ-साफ लिख कर दो! तब काहे की बहस?

लेकिन कुछ एंकरों को 'राहुल फोबिया' है। वे जब तक राहुल को ठोक न लें, तब तक उनको चैन नहीं पड़ता दिखता। कई एंकरों में कंपटीशन-सा दिखता है कि कौन किस तरह से राहुल को शर्मिंदा करता है, उनकी शेम शेम करता-कराता है और सीधे माफी मंगवाता है।

एक बार फिर राहुल की नागरिकता पर सवाल उठाए जाने लगे। और इस बार नागरिकता का सवाल किसी छोटे-मोटे ने नहीं उठाया, बल्कि सुब्रह्मण्यम स्वामी ने उठाया कि राहुल की नागरिकता स्पष्ट हो!

ज्यों ही नागरिकता पर सवाल उठा, त्यों ही सब चैनल 'बिजी' हो गए। एक चैनल पर कांग्रेसी प्रवक्ता ने साफ कर दिया कि पहले भी यह मुद्दा उठाया गया था और सर्वोच्च अदालत ने उसका फैसला भी कर दिया था कि वे भारत के नागरिक हैं।

लेकिन सवाल तो सवाल है। और वह भी राहुल की नागरिकता का सवाल! आप उठा भर दें और पूरे दिन आनंद लें। चैनल सवाल लपक लेंगे और पहले से ही उत्तरित सवाल को फिर से दिन भर धुनते हुए पूछते रहेंगे कि राहुल जी आप किस देश के नागरिक हैं? ताकि राहुल की नागरिकता को लेकर फिर से संदेह का जाल बुन दिया जाय!

एक दिन जब कोई बड़ा मुद्दा न मिला, तो एक न्यायप्रिय एंकर आयोग के ही पीछे पड़ गया। कहने लगा कि चुनाव आयोग में महीने पुरानी ढेर सारी शिकायतें पड़ीं हैं, लेकिन आयोग विचार ही नहीं करता!

यारो! ये क्या बात हुई? इस देश में चुनाव करवाना हंसी ठट्ठा है क्या? हर आदमी दूसरे की शिकायत करने को तैयार रहता है। किस-किस से निपटें?

और भई! हमें तो अपने सभी नेता, वक्ता, प्रवक्ता और अधिवक्ता 'आदर्श' नजर आते हैं। वे जानते हैं कि जब तक जोरदार 'बाइट' का प्रहार न करें, कोई सुनता ही नहीं। चैनलों को चटपटी बाइट न दें तो खबर कैसे बने? और खबर न बने तो चुनाव कैसे जीतें?

पहले तो एंकर ही कुरेद-कुरेद कर कुछ न कुछ कड़वा-तीखा कहलवा लेते हैं, फिर हाय हाय करते-कराते हैं, फिर दूसरे आ जुटते हैं और पूरे दिन हाय हाय करते-कराते रहते हैं। इस सब में बताइए आयोग करे तो क्या करे?

बुरका बंद किया श्रीलंका ने और प्रेरणा मिली शिवसेना को और 'सामना' को। उसने फौरन लाइन दी कि इधर भी बुरका बैन जरूरी!

इंडिया टुडे पर एक भाजपा प्रवक्ता ने बताया कि भाजपा इस मांग से सहमत नहीं। शाम तक उद्धव ठाकरे ने भी 'सामना' की लाइन से शिवसेना को अलग कर लिया। लेकिन इससे क्या? बात निकली तो दूर तक गई ही। पहले ओवैसी जी उवाचे कि बुरका बैन तो घूंघट बैन क्यों नहीं? उधर जावेद अख्तर बोले कि बुरका बैन करें तो घूंघट बैन भी करें।

यानी न बुरका बैन करो न घूंघट बैन करो! इसे कहते हैं : 'कपंटीटिव सेक्युलरवाद!'

इस बीच एक एंकर से बातचीत में प्रियंका बोल उठीं कि हम वोट काटने के लिए लड़ रहे हैं।... ये क्या कह उठीं प्रियंका जी! कल तक कहती थीं कि हम जीतने के लिए लड़ रहे हैं। अचानक यह क्या उलटा-पुलटा कह बैठीं? चुनाव के सबसे निर्णायक दौर में क्या कभी ऐसी बातें भी बोली जाती हैं? अगले दिन गलती को ठीक किया, लेकिन बात तो निकल चुकी थी।

भाजपा ने तुरंत ताल ठोकी कि ऐसा कह कर कांग्रेस ने हार स्वीकार कर ली है। चुनाव के आखिरी चरणों में ऐसा बढ़िया सेल्फ गोल सिर्फ कांग्रेस ही कर सकती है!

बस एक ही सुंदर और प्रसन्न क्षण तब बनता दिखा, जब चैनलों में खबर ब्रेक हुई कि यूएन द्वारा मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय टेररिस्ट घोषित कर दिया गया है। अपने कई एंकर इसे सुन अपना सीना ऐसे फुलाए रहे, मानो उनके ही पुण्य प्रयत्नों से ऐसा हुआ हो।

खुशी के ऐसे मौके पर भी विघ्नसंतोषी न माने। कांग्रेस ने कहा कि अच्छी बात है, लेकिन इतने से क्या होता है? आजाद बोले कि सरकार को मांग करनी चाहिए कि हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे आतंकवादियों को भारत को सौंपा जाए!

भाजपा के प्रवक्ता इस मुद्दे पर अपने फार्म में दिखे कि देखी हमारी सरकार और हमारे नेता की ताकत कि ऐसा हो पाया कि चीन तक ढीला हो गया। यह है अपना पव्वा!

विघ्नसंतोषी कांग्रेस के प्रवक्ता फिर भी न माने। कहने लगे कि इसके लिए चौदह से उन्नीस तक इंतजार क्यों किया? यह पहले भी हो सकता था, अभी ये क्यों हुआ?

हमारी नजर में ऐसी आलोचना हारी हुई आलोचना होती है, जो जिसकी आलोचना करती है उसी की ताकत को बढ़ाती नजर आती है। इसमें एक खिसियाहट ही झलकती है!

नई दिल्ली